ASV देवरिया और कुशीनगर के शिक्षको का प्रशिक्षण

देवों की नगरी देवरिया और महात्मा बुद्ध की निर्वाण स्थली कुशीनगर का देश के साथ-साथ विदेशों में अपना एक बहुत ही महत्तवपूर्ण स्थान है । इन्हीं दोनों जिलों में करीब ३ वर्ष पूर्व वंचितो को शिक्षा देने के लिए सामाजिक कार्यकर्ता केशव जी ने आशा सामाजिक विद्यालय की शुरूआत की । करीब एक वर्षो से शिक्षक प्रशिक्षण की योजना बनती रही मगर ऐसी परिस्थितियां नही बन सकी अंततः २६ जुलाई २००९ को देवरिया के मिश्रौली गांव में शिक्षक प्रशिक्षण होना तय हुआ । २६ जुलाई २००९ को मै (महेश) और लक्ष्मीकान्त शुक्ला जी मैरवां पहुंचे जो बिहार में पड़ता है । वहां से मिश्रौली के लिए हम लोग बाइक से चल दिये रास्ते में हम लोग कई बार उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य में होते रहे क्योंकि हम लोग जिस रास्ते पर चल रहे थे वही रास्ता उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य को बांट रहा था । मिश्रौली गांव के एक विद्यालय में शिक्षक प्रशिक्षण का कार्यक्रम रखा गया था । परिचय सत्र से आज के प्रशिक्षण की शुरूआत की गयी । परिचय सत्र के बाद हम भारत के बच्चें गुरूजन..... गीत गाया गया। प्रशिक्षण को चार सत्रों में बाटां गया।

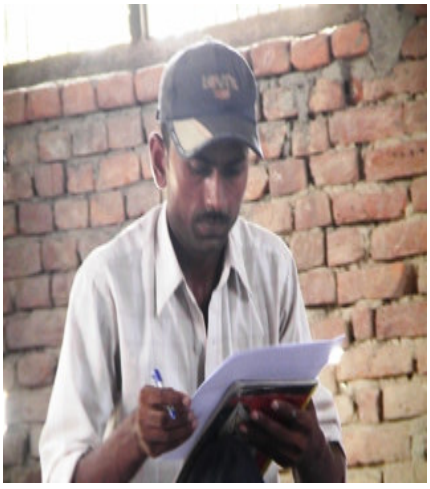

- भाषा की समझ और उसकी गतिविधियां
- गणित की समझ और गतिविधियां
- खेल, कविता और अन्य गतिविधियां
- शिक्षा के मायने और समझ

परिचय और मूल्यांकन प्रपत्र भरने के बाद प्रशिक्षण के पहले सत्र की शुरूआत लक्ष्मीकान्त शुक्ला जी ने की, भाषा की विकास क्रम पर चर्चा करने के बाद उन्होंने बताया कि किस तरह से हम बच्चों पर बिना बोझ डाले उन्हें भाषा का ज्ञान खेल-खेल में करा सकते हैं । प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने बताया कि बच्चों

को अगर चित्र के माध्यम के अक्षर ज्ञान कराया जाय तो वे भाषा सरल ढंग से और जल्द सीख जायेंगे । अक्षर कूद और अक्षर लूट, अक्षर जोड़ो तोड़ो आदि खेल के माध्यम से आसान और मजेपूर्ण ढंग से भाषा को सिखाने के तरीके बताये । दूसरे सत्र में गणित पर चर्चा करते हुए अंको के विकास क्रम के इतिहास के बारे में बताते हुए उसके विकास की जरूरतों पर भी चर्चा की । भाग विधि पर बात करते हुए उन्होंने बताया कि हमारे पढ़ाने का ढ़ग सही नहीं है, हम भाग में कभी भी शून्य का भाग देना नहीं सिखाते है, इसलिए बच्चा कभी भी ये नहीं समझ पाता कि जब भाग किसी अंक में भाग नहीं जाता है, तो हम भागफल में एक शून्य बढ़ाकर दूसरी अंक क्यो उतारते है । भिन्न की आधारभूत बातों पर चर्चा कर उन्होने भिन्न को सरलीकरण ढ़ग से समझाने की विधि बताई, साथ ही बच, अंक खो गया जैसे कई खेल खिलाकर गणित को मजे के लिए पढ़ने का ढ़ग बताया

उसके बाद मैने गुणा करने की दूसरी विधियों को बताते हुए बच्चें खुद कैसे अपने द्वारा हल किये जोड़ घटाने को जांच सके इसके लिए उन्हे गिनती कैलकुलेटर बनाया सिखाया । उसके बाद अगले सत्र में उन्हे कविताओं को मजेदार पूर्ण ढ़ग से पढ़ाने की विधि बताई गयी । साथ ही कई खेल और पहेली भी सिखाये जो उन्हें पढ़ाने में मदद कराने के साथ मनोरंजन भी कर सके । शिक्षा की समझ में बातचीत के दौरान जब उनसे ये सवाल पुछा गया कि वे शिक्षा का मतलब क्या समझते है बताये, तो शिक्षकों ने बहुत ही आदर्श बाते बताई मगर अगले सवाल के आते ही कि, क्या हम या वर्तमान शिक्षा व्यवस्था आपके द्वारा बताई गयी बातों पर खरी उतरती है । चर्चा के अन्त में निकल कर आया कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था या हमारी स्कूलो की शिक्षा व्यवस्था उन में से एक भी बिन्दुओं पर अपने को पूरा नहीं कर पा रही है । यहां तक कि हम सही ढ़ग से साक्षरता (वर्तमान शिक्षा व्यवस्था) भी देने में अक्षम साबित हो रहे है । मैने शिक्षा के सही मायनों और उसकी समझ तथा जरूरत पर अपनी बात रखते हुए आज के शिक्षक प्रशिक्षण का समापन किया । अन्त में सभी शिक्षकों ने आज के प्रशिक्षण की उपयोगिता के बारे में बात करते हुए बताया कि आज के प्रशिक्षण से हमें काफी कुछ सीखने के मिला है । आगे भी इस तरह के प्रशिक्षण का आयोजन हो तो हमारी समझ मजबूत होने के साथ - साथ हमे नयी - नयी शिक्षा पद्धतियों के बारे में जानकारी होती रहेगी जो हमें सही अर्थो में और रूचिपूर्ण शिक्षा देने में मदद करेगी ।

Mahesh Kumar

“Asha Kanpur”

“Apan Ghar”, B-135/8, Pradhane Gate, Nankari ,IIT, Kanpur-16 India

Ph: +91-512-2770589,Cell No. +91-9838546900, +91-9005486442
http://balsajag.blogspot.com/,http://rtiup.blogspot.com,http://alivephoto.blogspot.com,www.ashaparivar.org,